

परस सीन फशिंग

प्रलिमिंस के लयि:

12 समुद्री मील, पश्चिमी तट, वशिष आर्थिक क्षेत्र, राज्य वषिय ।

मेन्स के लयि :

परस सीन फशिंग तकनीक और इसके लाभ ।

चर्चा में क्यों?

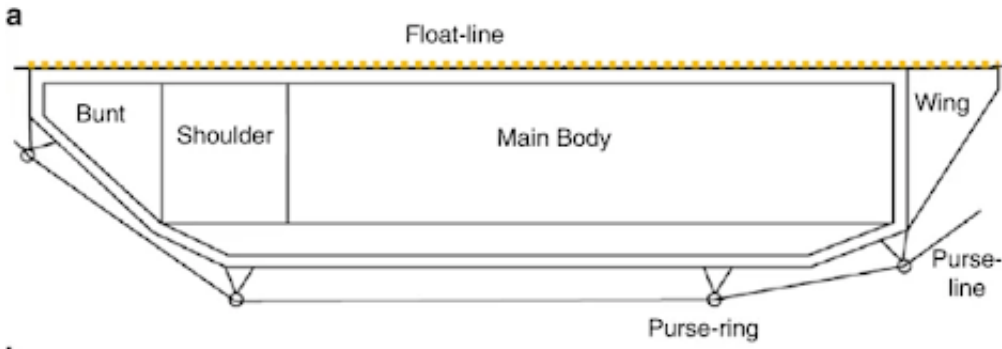
केंद्र ने [सर्वोच्च न्यायालय](#) को बताया कि कुछ तटीय राज्यों द्वारा परस सीन फशिंग पर लगाया गया प्रतिबंध, उचित नहीं है ।

संबंधित मुद्दे:

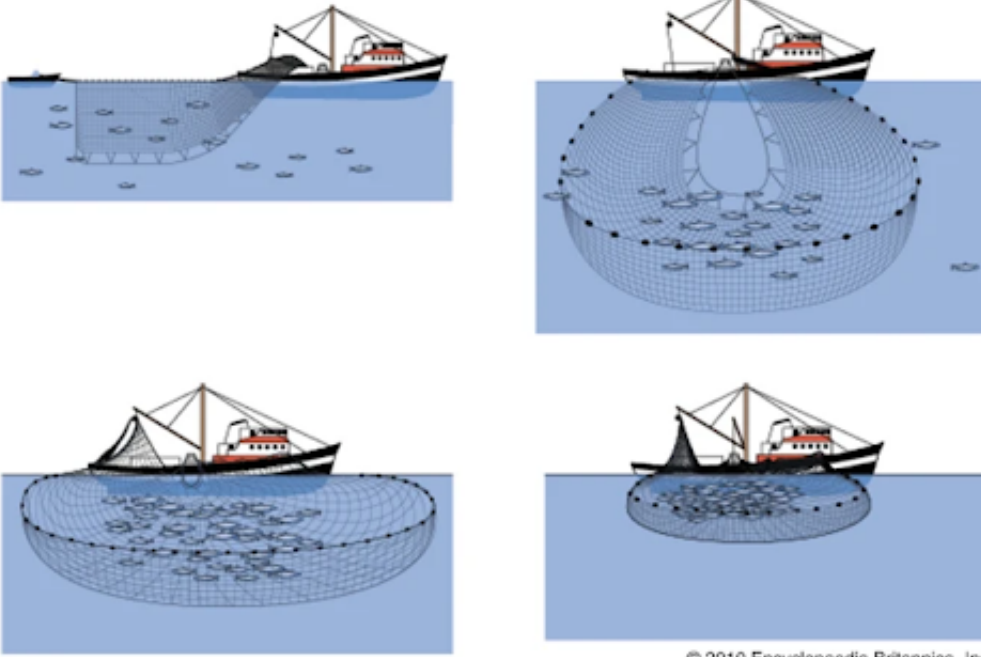
- वर्तमान में तमलिनाडु, केरल, पुदुचेरी, ओडिशा, दादरा एवं नगर हवेली तथा दमन और दीव तथा अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के प्रादेशिक जल में 12 समुद्री मील तक परस सीन फशिंग पर प्रतिबंध लागू है ।
- जबकि गुजरात, आंध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक तथा पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों ने ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है ।

परस सीन फशिंग:

- परचिय:
 - एक परस सीन, फ्लोटिंग और लीडलाइन के साथ जाल की एक लंबी दीवार से बना होता है और इसमें गयिर के नचिले कनारे से परस के छल्ले लटके होते हैं, जिसके माध्यम से स्टील के तार या रस्सी से बनी एक परस लाइन चलती है जिसमें मछलियाँ फँसती हैं ।
 - इस तकनीक का उपयोग भारत के पश्चिमी तटों पर व्यापक रूप से किया जाता है ।



b
Setting and hauling a purse seine



© 2010 Encyclopaedia Britannica, Inc.

■ लाभ:

- खुले पानी में परस सीन फिशिंग को मछली पकड़ने का एक कुशल रूप माना जाता है ।
- इसका सीबेड से कोई संपर्क नहीं है और जिसके कारण यह मछली पकड़ने का एक नमिन स्तर हो सकता है ।
- इसका उपयोग मछली एकत्र करने वाले उपकरणों के आसपास मौजूद होने वाली मछलियों को पकड़ने के लिये भी किया जा सकता है
- इसका उपयोग खुले समुद्र में टूना और मैकेरल जैसी एकल-प्रजातिके पेलाजिक (मडिवाटर) मछली के समूहों को लक्ष्य करने के लिये किया जाता है ।

चर्चाएँ:

- कुछ राज्यों में यह तकनीक [पश्चिमी तटों](#) पर सारडनि, मैकेरल, एंकोवी और ट्रेवेली जैसी छोटी, पीलाजिक शोलगिमछलियों के घटते स्टाक के बारे में चर्चाओं से जुड़ी है ।
- वैज्ञानिकों का तर्क है कि पिछले दस वर्षों में ऐसी मछलियों की कमी के लिये [अल नीनो](#) घटना सहित जलवायु परस्थितियाँ ज़िम्मेदार हैं ।
- हालाँकि पारंपरिक तरीकों का उपयोग करने वाले मछुआरों ने परस सीन फिशिंग को दोषपूर्ण बताया है, अगर प्रतबंध हटा दिया जाता है तो इन छोटी मछलियों की उपलब्धता में और गतिवट आ सकती है ।
 - उन्होंने यह भी मांग की है कि [केंद्र](#) ने प्रतबंध हटाने का समर्थन किया है, अतः केंद्र को इस पहलू के संदर्भ में विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट प्रकाशित करनी चाहिये ।
- एक बड़ी चर्चा [सारडाइन मछली की कमी](#) होना है जिसने केरल के लोगों द्वारा बड़े चाव से खाया जाता है ।
 - वर्ष 2021 में केरल ने केवल 3,297 टन सारडाइन मछली पकड़ी, जो 2012 में पकड़ी गई 3.9 लाख टन से बहुत कम थी ।
- परस सीन एक गैर-लक्ष्य मछली पकड़ने की विधि है और कश्शोर मछलियों सहित जाल के रास्ते में आने वाली सभी प्रकार की मछलियों को पकड़ता है । अतः यह [समुद्री संसाधनों के लिये बहुत हानिकारक](#) है ।

बैन के खिलाफ केंद्र सरकार के तर्क?

- केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने विशेषज्ञ समिति द्वारा प्रस्तुत एक रिपोर्ट पर परस सीन फिशिंग पर प्रतबंध

हटाने की सफ़ाई की है।

- वशिषज्ज पैनल ने कहा है कि मछली पकड़ने के इस तरीके के "उपलब्ध सबूतों को देखते हुए अब तक किसी भी गंभीर संसाधन की कमी नहीं हुई है"।
- वशिषज्ज पैनल ने कुछ शर्तों के अधीन प्रादेशिक जल और **वशिष आर्थिक क्षेत्र (EEZ)** में मछली पकड़ने के लिये परस सीन फशिगि की सफ़ाई की है।
- समिति ने "परस सीन फशिगि पर राष्ट्रीय प्रबंधन योजना" बनाने का भी सुझाव दिया है।

मछली पकड़ने का क्षेत्राधिकार:

- मत्स्यपालन राज्य का वशिष है और प्रादेशिक जल में समुद्री मत्स्यपालन के लिये प्रबंधन योजना राज्य का कार्य है।
- राज्य सूची में 61 वशिष (मूल रूप से 66 वशिष) होते हैं।
 - ये स्थानीय महत्त्व के हैं जैसे स्थानीय सरकार, सार्वजनिक व्यवस्था और पुलिस, कृषि, वन, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, मत्स्यपालन, शिक्षा, राज्य कर और शुल्क। सामान्य परिस्थितियों में राज्यों के पास राज्य सूची में उल्लिखित वशिषों पर कानून बनाने की वशिष शक्ति होती है।

स्रोत: द दृष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/purse-seine-fishing>

